आज़ादी का
अमृत महोत्सव

भारतीय स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव : संधी आणि आव्हाने

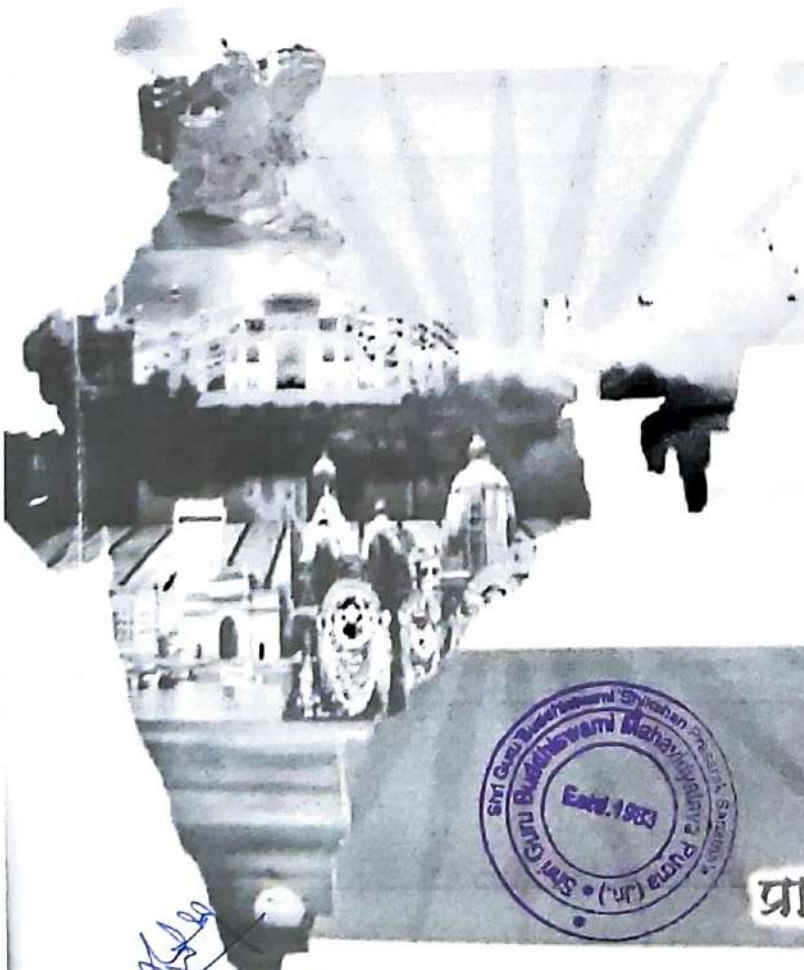

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

मुख्यसंपादक

प्राचार्य.डॉ.सदाशिव सरकटे

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

ISBN No.: 978-81-955479-7-5

मुख्य संपादक
प्राचार्य डॉ. सदाशिव सरकटे
मो. नंबर : 7875827115

•

प्रकाशक
सिद्धी पब्लिकेशन,
मारोती मंदिराजवळ,
भावसार चौक, तरोडा खु. नांदेड
मो. 9623979067
ईमेल – shrishprakashan2009@gmail.com
Website : www.wiidrj.com

•

अक्षर जुळवणी
डॉ. राजेश गंगाधरराव उंबरकर

•

मुद्रक
अनुपम प्रिंटर्स
श्रीनगर, नांदेड. मो. 9175324437
© सर्व अधिकार संपादकाकडे
•

प्रथम आवृत्ती
24 मे 2022
किंमत : 400 /- रु

सदरील ग्रंथातील कोणताही भाग किंवा मजकूराकरीता संदर्भ लेखक स्वतः जबाबदार राहतील संपादक जबाबदार असणार नाही.

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd.1983

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist.-Parbhani - 431511 (M.S.)

:: शुभेच्छा ::

आपल्या महाविद्यालयाने **"भारतीय स्वातंत्र्याचा अमृत महोत्सव : संधी आणि आव्हाने"** या अनुषंगाने सर्व विषयाला सामावून घेणारे आंतरराष्ट्रीय ई चर्चा सत्र घेतले याचा मला मनापासून आनंद आहे.

स्वातंत्र्य लढा आणि स्वातंत्र्याचा इतिहास हा सर्व भारतीयासाठी सतत प्रेरणादायी आहे. अस्मिता, राष्ट्रहित व राष्ट्र – भक्ती या बाबतीत अनेकांच्या योगदानाचा हे चर्चासत्र जागर करणारे ठरेल याचा मला विश्वास वाटतो. समता, स्वातंत्र्य, बंधुता व मानवतेच्या आधारावरची महाशक्ती म्हणून भारताची पुढची वाटचाल रेखाटण्यासाठी अशा विचार विनिमयाची गरज भासणारच आहे.

या ई चर्चासत्रासाठी संशोधकांनी पाठवलेल्या शोध निबंधाचे तीन खंडातून प्रकाशन होत आहे. हे कौतुकास्पद व जयभवानी शिक्षण प्रसारक मंडळाच्या परंपरेस उज्वल करणारे आहे. हा ग्रंथ अभ्यासक व वाचकांना निश्चितच मार्गदर्शक ठरेल. यासाठी माझ्या मन: पूर्वक शुभेच्छा ....!

अमरसिंह शिवाजीराव पंडित
अध्यक्ष
जयभवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

१०	स्वातंत्र्य चळवळीतील मराठी साहित्य - साने गुरुजी	डॉ. मधुलता मिठाराम भारवे	८२
११	तावडी बोली जिवंत ठेवणारा लेखक - डॉ. अशोक कौतिक कोळी	स्वप्नील युवराज भोसले	९७
१२	'डी.डी.बापू लाड : आत्मकथन एक संघर्ष यात्रा' मधील स्वातंत्र्य चळवळीचे चित्रण	प्रा. धनंजय वसंत भाट	१०६
१३	मराठीसाहित्य आणि व्यक्तिमत्व विकास	प्रा. डॉ. अपर्णा अ. पाटील	११३
१४	मन वाड्मयातील समता, स्वातंत्र्य, मानवता	प्रा. डॉ. गयराम नाना पांटे	१२०
१५	संयुक्त महाराष्ट्र लढ्यातील शाहीरी वाङ्मयाचे (मराठी साहित्य) योगदान	पुरुषोत्तम प्र. सुर्य	१२७
१६	समग्र जीवनाचे सम्यक आकलन करणारा कथासंग्रह - मांड्व	प्रो. डॉ. वासुदेव सोमाजी वले	१३७
१७	कवी विठ्ठल वाघ यांची कविता	प्रा. डॉ. रामकृष्ण प्रधान	१४१
१८	मराठी कथा कादंबरी आणि स्वतंत्र्य चळवळ	प्रा. मिलिंद ठोकळे	१६०
१९	'तमस' में सांप्रदायिकता आजादी के पूर्व और आज	प्रा. हिरा पोटकुले	१६६
२०	स्वतंत्रता आंदोलन और स्वतंत्रता पूर्व की हिन्दी कविता	डॉ. कविता मीणा	१७२
२१	प्रेमचंद साहित्य : स्वतंत्रता संग्राम का महाआख्यान	डॉ. सिन्धु सुमन	१८०
२२	स्वतंत्रता आन्दोलन के सर्जनात्मक नायक मुंशी प्रेमचन्द	डॉ. यशोदा मेहरा	१८८
२३	हिंदी कविता का आधुनिक काल और राष्ट्रीयता	डॉ. श्रीकान्त शुक्ल	१९५
२४	नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में नारी चेतना	प्रा. डॉ. मारोती उत्तमराव खेडेकर	२०२
२५	फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना	डॉ शुभा बाजपेयी	२१०
२६	प्रेमचन्द के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना	डॉ. सरोज कुमारी	२२०
२७	संतसाहित्य और मानवतावाद	प्रा. डॉ. जितेंद्र प्रताप शेळके	२२७
२८	डॉ. बलदेव के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर	श्रीमती वंदना जायसवाल डॉ. स्नेहलता निर्मलकर	२३६
२९	स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी कविता की भूमिका	डॉ. अनिमा मिश्रा	२४४
३०	स्वतंत्रता आंदोलन और डॉ. रमाकान्त सोनी के साहित्यों में राष्ट्रीय संचेतना : एक अनुशीलन	सरोजनी डडसेना डॉ.रेखा दुबे	२५१
३१	अहल्या की नारी चेतना	प्रो. डॉ. आहेर संगीता एकनाथराव	२५७
३२	भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्रीयता	प्रा. डॉ. विजय पवार	२६२

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak... Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.)
Estd.1983

भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्रीयता

प्रा. डॉ. विजय पवार

हिंदी साहित्य में आधुनिक काल भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। रीतिकालीन सामंती आदर्श जर्जरित होते जा रहे थे तथा हिंदी साहित्य में नवोत्थानारंभ हो चुका था। वैज्ञानिक साधनों-रेल, तार, मुद्रण यंत्र आदि के द्वारा समाज में नया परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा था। सन १८५७ का विप्लव भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना रही। यद्यपि हिंदी साहित्य में इस संघर्ष का अधिक उल्लेख नहीं मिलता। लेकिन लोकभाषाओं में देश की स्वतंत्रता को प्राप्त करनेवाले वीर पुरुषों के शौर्य पूर्ण युद्ध की सुंदर तथा मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। इन लोक-गीतों में विदेशी राज्य के प्रति घृणा तथा उपेक्षा का भाव व्यंजित हुआ, जिससे देश के जनमानस की चेतना और देशप्रेम की भावना का अनुमान लगाया जा सकता है। इन साहित्य में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के उग्र रुप की झाँकी दिखाई देती है। जिससे आनेवाले कई वर्षों तक ब्रिटिश शासन से संघर्षरत रहने की प्रेरणा और शक्ति मिलती रही।

जिस कविता में देश को जागृत करने का सामर्थ्य होता है, वह कविता राष्ट्रीय चेतना की कविता कहलाती है। राष्ट्रीय चेतना के काव्य में देश की त्रुटियों का वर्णन निसंकोच रुप से किया जाता है। देश के दुःखद् एवं सुखद् घटनाओं के साथ कवि के प्राण क्लेशित और रोमांचित होते रहते हैं। उसके हृदय की स्थिति [illegible] पतन के साथ उठती-गिरती रहती है। भारतेंदु यु[illegible] में [illegible] का जो प्रभावी रुप मिलता है, वह भारतीय [illegible] की देन

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.)
Estd.1983

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

है। वैदिक और संस्कृत भाषा में ईश्वर की परमसत्ता को स्वीकार करते हुए मानव कल्याण की कामना की गई है। इसके तहत हम कह सकते हैं कि, राष्ट्रीयता का मूल भी हमारा वैदिक तत्त्व और मानवीय तत्व रहा है। भारतेंदु युगीन धरातल पर राष्ट्रीयता को नूतन रुप मिला है। हिंदी साहित्य का आधुनिक युग स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीयता का युग रहा है। भारतीय स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता का भावप्रवण रुप विकसित हुआ है। देश की संस्कृति, सभ्यता भाषा, परंपरा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की मनभावन आधारभूमि पर देशवासियों में एकानुभूतियों का उन्मेष हुआ है। युगीन कवियों ने अतीत की गौरवशाली गाथा को प्रस्तुत करते हुए 'स्वाभिमान' और 'राष्ट्रीयता' को उद्दीप्त किया है। हिंदी साहित्य के इस नवीन विशदपूर्ण और विविध विषय संपन्न स्वरुप के निर्माण का श्रीगणेश दो सभ्यताओं के सांस्कृतिक संपर्क के फलस्वरुप 19 वी शती के उत्तरार्ध में हुआ था। भारतीय सभ्यता शताब्दियों के बोझ से स्थिर हो चुकी थी। इसी समय वह एक यंत्रसज्ज विजेता देश के संपर्क में आ गई। अंग्रेज लोग यांत्रिक, औद्योगिक सभ्यता के अग्रदूत तथा नवीन ऐतिहासिक शक्ति के प्रतिनिधि होने के कारण प्रभावपूर्ण बन गए थे। इस पाश्चात्य संपर्क के परिणाम स्वरुप ही भारत में राष्ट्रीयता का उदय हुआ। इसमें सजीवता उत्पन्न हुई और राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का विकास हुआ। इस युग की राष्ट्रीयता के संदर्भ में सन १८५७ का वर्ष महत्वपूर्ण घटना के रुप में सामने आया है। इस समय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से अंग्रेजी शासन को समाप्त करने का प्रयत्न किया गया किंतु ऐसा नहीं हो सका। भारतीय जनमानस में उभरा विद्रोह स्वतंत्रता का अभिलाषी था। इस आंदोलन से राष्ट्रीयता का मुखर स्वर सामने आया है। युगीन कवियों ने

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani